षोडशः पाठः
नीतिनवनीतानि

Q5YPFL

1. विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।

   पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनाद् धर्मः ततः सुखम्।। 1।।

2. नास्ति विद्यासमं चक्षुः नास्ति सत्यसमं तपः।

   नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम्।। 2।।

3. विदेशेषु धनं विद्या व्यसनेषु धनं मतिः।

   परलोके धनं धर्मः शीलं सर्वत्र वै धनम्।। 3।।

4. वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खः शतान्यपि।

   एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति, न च ताराशतैरपि।। 4।।

5. सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

   प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः।। 5।।

6. परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः

   परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकाराय सतां विभूतयः।। 6।।

7. अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

   उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।। 7।।

शब्दार्थाः

ददाति = देता है। विनयात् = विनय से। पात्रताम् = योग्यता। आप्नोति = प्राप्त होता है। ततः = उससे। नास्ति = नहीं है। समम् = समान। विदेशेषु = विदेशों में। व्यसनेषु = व्यसनों में। परलोके = परलोक में। वरम् = श्रेष्ठ। तमः = अंधकार। हन्ति = मारता है। ब्रूयात् = बोलना चाहिये। परोपकाराय = परोपकार के लिये। फलन्ति = फलते हैं। वहन्ति = बहती हैं। अयम् = यह। परोवेति = पराया। वसुधैव कुटुम्बकम् = सम्पूर्ण धरती ही परिवार है।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिये –

(क) विद्या किं ददाति ?

(ख) किं समं सुखं नास्ति ?

(ग) कुत्र धनं धर्मः ?

(घ) कः गुणी पुत्रो अस्ति ?

(ङ) कथं ब्रूयात् ?

(च) कस्मै वृक्षाः फलन्ति ?

(छ) केषां तु वसुधैव कुटुम्बकं भवति ?

प्रश्न 2. निम्न रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) नास्ति सत्यं ..... तपः।

(ख) ..... धनं विद्या।

(ग) न च ..... शतान्यपि।

(घ) ..... ब्रूयात् ..... ब्रूयात्।

(ङ) उदारचरितानां तु .....।

प्रश्न 3. उचित संबंध जोड़ो –

(क)	वसुधैव कुटुम्बकम्	–	तपः
(ख)	दुहन्ति	–	विनयम्
(ग)	गुणीपुत्रो	–	गावः
(घ)	विद्या	–	वरम्
(ङ)	सत्यं	–	उदारचरितानाम्

प्रश्न 4. "विद्या" आकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग की कारक रचना लिखिए।

प्रश्न 5. 'प्राप्' शब्द का लट् लकार एवं लृट् लकार परस्मैपद में रूप चलाइए।

❖ ❖ ❖

Q68KH9